उपसंहार

आधुनिक हिंदी कहानी के निर्माण और विकास में अमरकांत के ऐतिहासिक योगदान को सभी स्वीकार करते हैं। सन् 1950 से वह निरंतर लिख रहे हैं और इस बीच अमरकांत ने हिंदी साहित्य को कुछ ऐसी कहानियाँ दी है जो विश्व की श्रेष्ठतम् कहानियों के बीच रखी जा सकती हैं। 'दोपहर का भोजन' से लेकर 'एक धनी व्यक्ति का बयान' तक की अपनी साहित्यिक यात्रा में अमरकांत ने विकट और जटिल होते जाने वाले भारतीय समाज की विस्मयकारी सच्चाइयों को अत्यधिक संवेदना के साथ रेखांकित किया है। 50 के बाद हिंदी कहानी के क्षेत्र में जिस जागरूक नयी पीढ़ी का प्रवेश हुआ उसमें अमरकांत का नाम अग्रणी है। अमरकांत सामाजिक संलग्नता को रचना का खास उद्देश्य मानते हैं और इसी के अनुसार अपनी कहानियों की वस्तु का निर्माण करते हैं। आपकी कहानियों में प्राचीन आदर्श तथा परंपरागत मूल्यों का विघटन मिलता है। मूलतः आप मानव मूल्यों के कहानीकार सिद्ध होते हैं।

''अमरकांत एक सशक्त कहानीकार हैं जिनकी रचनाओं में निम्न-मध्यवर्ग और मध्यवर्ग का जीवन प्रतिबिंबित हुआ है। अमरकांत की कहानियाँ मानवीय वास्तविकता से होकर समय को मापती, मूर्त एवं परिभाषित करती हैं। अमरकांत के बिना आज की नई कहानी की कोई भी चर्चा अधुरी है। कहानियों का निर्माण जीवंत वस्तु शिला पर होता है इसलिए वे पत्थर की तरह ठोस एवं कंक्रीट की तरह शक्ति संपन्न होती हैं।''

अमरकांत को प्रेमचंद परंपरा के कहानीकार कहा जा सकता है। क्योंकि आपकी कहानियों में मानवीय संवेदना तथा सहानुभूति उभरती है। आपने निम्नवर्गीय व्यक्ति की नस को पकड़ने की कोशिश की है। आपकी अभिव्यक्ति सहज एवं सरल हैं एवं जीवन दृष्टि प्रेमचंद परंपरा से मेल खाती है।

''अमरकांत पर लिखे गए एक लेख में गिरीराज किशोर ने आपकी तीनों प्रसिद्ध कहानियों - 'डिप्टी कलक्टरी', 'दोपहर का भोजन' और 'जिंदगी और जोंक' को अमरकांत की परवर्ती कहानियों की तुलना में रोमांटिक ऐटीट्यूड की कहानियाँ बताया है। उनके अनुसार इसका कारण यही था कि वह युग ही घनघोर रोमांटिकता का था और कोशिश के बावजूद अमरकांत का दामन भी उससे पूरी तरह बच नहीं सका।

अमरकांत स्पष्ट घोषणा करते हैं कि उनकी प्रतिबद्धता साधारण जन से है जो इस देश के भाग्य विधाता है।''[1]

''अमरकांत के संदर्भ में जिन दूसरे लेखकों की कहानियों का उल्लेख हुआ है, वे मुख्यतः स्त्री-पुरुष संबंधों को लेकर लिखी गयी कहानियाँ हैं। अमरकांत के यहाँ इस तरह की कहानियों के अभाव पर किसी को भी आश्चर्य हो सकता है। कहानियों की अपेक्षा अपने उपन्यासों में अमरकांत भी इन संबंधों को विस्तार से अंकित करते दिखाई देते हैं। पांचवे और छठे दशक में लिखित कहानियाँ जो अधिकतर - 'जिंदगी और जोंक' और 'देश के लोग' में संग्रहित हैं। ऊपरी तौर पर शिल्प विहीन कहानियाँ लगती हैं, वस्तुतः वे वैसी हैं नहीं। इन कहानियों में घटना और पात्र बेहद मामूली हो सकते हैं।''[2]

अमरकांत का रचना संसार महान रचनाकारों के रचना संसार जैसा विश्वसनीय है। उस विश्वसनीयता का कारण है स्थितियों का अचूक चित्रण। जिससे व्यंग्य और मार्मिकता का जन्म होता है। ''विशेषतः कस्बाई मध्यवर्गीय परिवार की विविध समस्याओं, आकांक्षाओं, संबंधों और क्रियाकलापों का बहुत जीवंत विधान किया है। उसके बीच-बीच में निम्नवर्ग की दुनिया भी आती रहती है और अमरकांत बड़े सहज भाव से इस सारे सामाजिक यथार्थ के केंद्र में वर्तमान, आर्थिक विषमता को रेखांकित करते रहते हैं। उपर्युक्त तथा अन्य अनेक अच्छी कहानियों के बीच आपकी कुछ कहानियाँ 'डिप्टी कलक्टरी' में एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की बनती और टूटती आकांक्षा और उसके लिए लहुलुहान होते परिवार के लोगों के संबंध की मर्म कथा है। 'जिंदगी और जोंक' में रजुवा जैसे अनाथ लड़के की नारकीय जिंदगी और फिर भी जिंदगी के प्रति उसके मोह की कथा है। यह कथा मध्यवर्गीय परिवारों की न जाने कितनी विसंगतियों से गुजरती हुई अपने अभिप्रेत अभिप्राय की निष्पति करती है।''[3]

मानव प्रतिमा को उसके परिवेश की समस्त विसंगतियों के साथ चित्रित करने में अमरकांत का नाम सबसे महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक जीवन की समस्त विसंगतियों का चित्रण आपकी कहानियों में मिलता है। इसलिए मधुरेश ने ठीक ही कहा है, अमरकांत की सारी कहानियों को एक जगह एक ही शीर्षक के अंतर्गत छापा जा सकता है और उसके लिए सबसे और सार्थक शीर्षक होगा 'देश के लोग'। कहने का तात्पर्य यह

है कि अमरकांत की कहानियों में निम्नमध्यवर्ग एवं मध्यवर्ग की विभिन्न समस्याओं का सहज चित्रण मिलता है। आपकी 'दोपहर का भोजन' कहानी में आर्थिक विपन्नता में टूटते परिवार को बचाने का प्रयत्न है तो 'हत्यारे' में सामाजिक विश्रृंखलता से उत्पन्न त्रास का कलात्मक ढंग से वर्णन है।

''आमरकांत की इन कहानियों में नेता भी है और अफसर भी, एक पत्नी के सहारे ही दूसरी पत्नी पाकर उसकी कमाई पर जीनेवाले परजीवी है और एकदम कुछ न करके भी बहुत कुछ करने का भ्रम पालने और पैदा करने वाले गगनविहारी किस्म के लोग भी जिनकी संख्या हमारी वर्तमान व्यवस्था में तेजी से बढ़ी है। इन कहानियों में ऐसे लोग भी हैं जिनके अतीत के अंधेरे में खिला उनके गुनाहों का फ्लाश महकता है।''[4]

आज की कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जिनमें चित्रित संघर्ष परिवेश की भिन्नता अथवा बदलती हुई परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हुआ है। आज की हिंदी कहानी इन्हीं परिवर्तित मूल्यों से उत्पन्न संघर्ष की कहानी है।

अमरकांत की एक विशेषता यह है कि समाज के बदलावों पर आपकी बड़ी पैनी निगाह रहती है। इस अर्थ में आप अपने समकालीन से बहुत आगे निकल गये हैं। 'हत्यारे' में अमरकांत ने उस गैर जिम्मेदार राजनीतिक तब के को तीस वर्ष पहले पहचान लिया और आजादी के बाद ही आम भारतीय के मोहभंग को 'डिप्टी कलक्टरी' के माध्यम से अभिव्यक्त किया था।

अमरकांत की कहानियाँ जिस एक मूलभाव को बार-बार उभारती हैं उसे हम जीने के लिए संघर्ष कहेंगे। अमरकांत की कहानियों का समय 'वर्तमान' है। ये कहानियाँ 'वर्तमान' में रहने के लिए संघर्ष करती हैं। आत्म-सम्मान संघर्ष को गहरा करता है। आत्म सम्मान नाम की वस्तु मध्यवर्गीय कमजोरी है और कई बार यह मनुष्य को कमजोर बना देती है।

लेखक होने के नाते भी इस बात को रेखांकित करना आवश्यक है कि अमरकांत ने अपने संपूर्ण अभावों और संघर्षों के बावजूद अपनी आस्था और निष्ठा को निरापद बनाये रखा।

संदर्भ संकेत

1. वागर्थ, अगस्त, 2005, पृ. 25

2. वही, पृ. 26

3. हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान, रामदशरथ मिश्र, पृ. 160

4. वागर्थ, अगस्त, 2005, पृ. 27